अध्याय 27

प्रतिज्ञा और मूल्यांकन

अध्याय 27 की सबसे पेचीदा बात, इस अध्याय को इस पुस्तक के अंत में रखा जाना है। अध्याय 26 वाचा से संबंधित आशीष और शाप से संबंधित बातें प्रस्तुत करता है; यह अध्याय और विशेषकर इसका अंतिम आयत, इस पुस्तक का आदर्श उपसंहार हो सकता था। यदि ऐसी बात थी तब, क्यों इस अध्याय को यहाँ सम्मिलित किया गया है?

इसका एक उत्तर यह है कि लैव्यव्यवस्था की पुस्तक की उपदेश क्रमानुसार व्यवस्थित की गई है - यह वह क्रम जिसमें परमेश्वर ने इसे मूसा को दिया था। यदि ऐसी बात है, तो एक विश्वासी यह कह सकता है, "परमेश्वर जहाँ चाहता था वहाँ उसने इन नियमों को रखा, और इसलिए हमें इसके बारे में और अधिक जानने की आवश्यकता नहीं है। हमें केवल इसे समझने की आवश्यकता है।" जबकि इस विचार धारा में दम है, परंतु रूढ़िवादी बाइबल के विद्यार्थी अभी भी परमेश्वर के प्रकाशन देने की संरचना का विश्लेषण करने में रूची दिखाते हैं।

बहुतों ने यह सुझाव प्रस्तुत किया है कि अध्याय 26 में प्रस्तुत की गई चरमोत्कर्ष उपसंहार के पश्चात अध्याय 27 को परिशिष्ट समझा चाहिए।[1] तो प्रश्न यह उठता है कि विधि की यह मुख्य बात क्यों परिशिष्ट के रूप में जोड़ा गया होगा? एक संभावना यह है कि इस अध्याय का अधिकांश भाग, अन्य छब्बीस अध्यायों की तुलना में, जिसमें भेंट और बलिदानों की आवश्यकता है, स्वेच्छा से यहोवा के साथ बांधी गई प्रतिज्ञा से संबंधित है। इस्राएलियों से अपेक्षित विधियों का प्रकाशन समाप्त करने के पश्चात, यहोवा ने कुछ निर्देश दिए जिसके लिए प्रतिज्ञा अपेक्षित नहीं था।[2]

दूसरी संभावनाएं भी सुझायी गईं हैं। गॉर्डन जे. वैनहैम ने प्रस्ताव रखा कि आखिरी दो अध्याय एक ही विषयवस्तु से जुड़े हुए हैं। अध्याय 26 इस बात का विश्लेषण करता है कि इस्राएली लोग परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं या नहीं मानते हैं, तब ऐसी स्थिति में वह उनके साथ कैसा व्यवहार करेगा, का विश्लेषण करता है। जबकि पिछला अध्याय परमेश्वर की प्रतिज्ञा को संबंधित करता है, लेकिन आखिरी अध्याय मनुष्य के प्रतिज्ञा पर केन्द्रित है।[3]

एक अन्य दृष्टिकोण इस पुस्तक के आखिरी तीन अध्यायों को एक और अनुभाग के रूप में प्रदर्शित करता है। इस प्रस्ताव के अनुसार, अध्याय 25 जुबली वर्ष का परिचय करता है और अध्याय 27 इस विषयवस्तु पर लौट आता है। अध्याय 25

और 26 आरंभ (25:1) और अंत (26:46) में "सिनै पर्वत" के उल्लेख से एक साथ जुड़ा हुआ है। अध्याय 26 इस अनुभाग के लिए एक आदर्श केन्द्रीय अनुभाग प्रस्तुत करता है। इस विचारधारा का विश्लेषण करते हुए रॉय गेन ने कहा कि अध्याय 26 को पुस्तक के अंत में रखने के बजाय अध्याय 25 और अध्याय 27 के बीच में रखना "प्राचीन इब्री दृष्टिकोण से अधिक संतुष्ट करने वाला विश्लेषण है, जो बहुधा महत्वपूर्ण मायने रखने वाले विषय को साहित्यिक संरचना के मध्य रखते हैं।"[4]

पुस्तक के अंत में इस अध्याय को रखे जाने का उद्देश्य जो भी हो, इस अध्याय में पाई जाने वाली विधियां, पहले तो इस्राएलियों द्वारा की जाने वाली संकल्प (व्यक्ति, पशु, और सम्पत्ति के संबंध में) और दूसरी वे बातें जिनको संकल्प में सम्मिलित नहीं किया जा सकता था, रखी गई है। संकल्प वह बात है जिसमें कोई यह प्रतिज्ञा करता है कि यदि परमेश्वर उसके उद्देश्य की पूर्ति करने में सहायता करेगा तो वह उसके बदले परमेश्वर को कुछ देगा।[5] संकल्प हमेशा स्वैच्छिक होते थे जिसमें परमेश्वर की ऐसी कोई विधि नहीं होती थी जिसमें उसके लोगों को संकल्प करने के लिए कहा गया था। फिर भी, संकल्प के संबंध में व्यवस्था में कुछ नियम नहीं पाया जाता है - विशेषकर यदि किसी ने संकल्प किया है वह उसका पालन करे। इस अध्याय में संकल्प के संबंध में पाए जाने वाले विधियों की आवश्यकता यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि परमेश्वर के लोगों के बीच यह एक सामान्य अभ्यास था।

इस अध्याय का अधिकांश भाग, परमेश्वर से की गई संकल्प की महत्वपूर्णता के बारे में है। जब कोई परमेश्वर को कुछ देने की प्रतिज्ञा करता है, तो प्रतिज्ञा की गई वास्तविक वस्तु देने के बजाय, वह अक्सर उस वस्तु के मूल्य के बराबर पैसा देता था। स्पष्टतया, जिस वस्तु के बारे में प्रतिज्ञा की गई है उसके मूल्य के बराबर चांदी देने की सामान्य परंपरा थी। इसलिए, परमेश्वर के लिए यह आवश्यक था कि वह इस बात को स्पष्ट करे कि जो भी परमेश्वर को कुछ देने की प्रतिज्ञा करता है तो जिस व्यक्ति ने यह प्रतिज्ञा किया है वह उसके बराबर मूल्य देकर उसको पूरा करे। इस अध्याय में दी गई सूचना इस आवश्यकता की पूर्ति करता है।

जो निर्देश यहाँ दिया गया है वह किसी व्यक्ति, पशु, घर, और खेतों के मूल्य से संबंधित है। अंत में, परमेश्वर को चढ़ाए गए भेंट से संबंधित विधि जो प्रतिज्ञा या संकल्प में सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए था, दिया गया है।

परमेश्वर को अर्पण किया गया व्यक्ति का मूल्य (27:1-8)

[1]"फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [2]इस्राएलियों से यह कह कि जब कोई विशेष संकल्प माने, तो संकल्प किए हुए प्राणी तेरे ठहराने के अनुसार यहोवा के होंगे; [3]इसलिये यदि वह बीस वर्ष या उससे अधिक और साठ वर्ष से कम अवस्था का पुरुष हो, तो उसके लिये पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार पचास शेकेल का रुपया ठहरे। [4]यदि वह स्त्री हो, तो तीस शेकेल ठहरे। [5]फिर यदि उसकी अवस्था पाँच वर्ष या उससे अधिक और बीस वर्ष से कम की हो, तो लड़के के लिये तो बीस शेकेल,

और लड़की के लिये दस शेकेल ठहरे। 6यदि उसकी अवस्था एक महीने या उससे अधिक और पाँच वर्ष से कम की हो, तो लड़के के लिये तो पाँच, और लड़की के लिये तीन शेकेल ठहरे। 7फिर यदि उसकी अवस्था साठ वर्ष की या उससे अधिक हो, और वह पुरुष हो तो उसके लिये पंद्रह शेकेल, और स्त्री हो तो दस शेकेल ठहरे। 8परन्तु यदि कोई इतना कंगाल हो कि याजक का ठहराया हुआ दाम न दे सके, तो वह याजक के सामने खड़ा किया जाए, और याजक उसकी पूँजी ठहराए, अर्थात् जितना संकल्प करनेवाले से हो सके, याजक उसी के अनुसार ठहराए।"

यहोवा का संकल्प के विषय में संदेश जिस व्यक्ति ने इसकी प्रतिज्ञा की है, उसको छुड़ाने के दाम के बारे में कहकर प्रारंभ होता है। यह अनुच्छेद इसका आंकलन करता है कि कभी-कभी एक इस्राएली, एक व्यक्ति को यहोवा को अर्पण करने की प्रतिज्ञा करता है। इस प्रकार का दो उदाहरण अक्सर उधृत किया जाता हैः यिप्तह का संकल्प, जिसके अनुसार उसको अपने पुत्री को यहोवा को भेंट करना (न्यायियों 11:30-40) और हन्ना का अपने होने वाले पुत्र (शमूएल) को यहोवा को अर्पण करना (1 शमूएल 1:11)। यद्यपि, यह संदेहास्पद है कि इस अध्याय में लिखे गए संकल्प इसमें से किसी से मेल खाती है। निश्चय, परमेश्वर मानवबलि की संस्तुति नहीं करता है।[6] लेकिन इससे बढ़कर, कुछ टीकाकार इस अध्याय में वर्णित प्रतिज्ञा को, एक व्यक्ति का किसी दूसरे व्यक्ति के लिए परमेश्वर की सेवा में अर्पण करने की प्रतिज्ञा मानते हैं (जिस प्रकार हन्ना ने शमूएल को अर्पण किया था), लेकिन फिर भी ऐसे असामान्य बातों का अभ्यास उस समय प्रचलन में नहीं था। आखिरकार, निवासस्थान की आराधना (जो जनसाधारण के द्वारा किया जा सकता था) से संबंधित कार्य भी बहुत नहीं थे, जिससे कि जिस व्यक्ति को यहोवा को अर्पण किया गया है, उसे व्यस्त रखा जा सके। इसलिए, उस व्यक्ति को परमेश्वर को अर्पण करने से संबंधित संकल्प की यह अपेक्षा की जा सकती थी कि उस व्यक्ति के दाम के बराबर मूल्य चुकाया जाना चाहिए था इसके बजाय कि उस व्यक्ति को जिसे अर्पण किया गया था, की बलि चढ़ाई जाती या फिर वेदी की सेवा में उसे आजीवन लगाया जाता।[7]

आयतें 1, 2. परमेश्वर के लिए संकल्प किए गए प्राणी के बारे में निर्देश इस बात के साथ प्रारंभ होता है कि ये विधियां और किसी से नहीं बल्कि **यहोवा** की ओर से आया था और **मूसा** के द्वारा यह इस्राएलियों को दिया गया था। यद्यपि यह अध्याय सामान्यतया **इस्राएलियों** को संबोधित किया गया है, लेकिन इसमें द्वितीय पुरुष (27:2, 3) का प्रयोग इस ओर संकेत करता है कि इन विधियों के प्राथमिक श्रोता याजक थे, जो इस पाठ में वर्णित मूल्यांकन के लिए ज़िम्मेदार थे (27:12)।

यहोवा ने उस प्रकार के संकल्प का विश्लेषण किया है जिसे वह नियंत्रित करना चाहता था। दूसरी आयत की आज्ञा को NASB इस प्रकार अनुवाद करता है, **जब कोई विशेष संकल्प माने, तो संकल्प किए हुए प्राणी तेरे ठहराने के अनुसार यहोवा का होगा।**[8] इसे समझना **कठिन** होगा और दूसरे अनुवादों के तुलना में यह अपकृष्ट है। NRSV में यह जब कोई व्यक्ति यहोवा के लिए मनुष्य के समतुल्य स्पष्ट संकल्प

करता है अनुवाद किया गया है। NIV इसका अनुवाद इस प्रकार करता है, यदि कोई किसी प्राणी को उसके समतुल्य दाम देकर यहोवा को अर्पण करने का विशेष संकल्प करता है। NAB में ऐसा अनुवाद किया गया है, जब कोई एक या उससे अधिक प्राणी को यहोवा को भेंट करने के संकल्प को पूरा करता है, तो उन्हें निर्धारित दाम चुकाकर छुड़ाया जाना चाहिए था। तब आयत 2, प्रथम अनुच्छेद की विषयवस्तु का परिचय देती है।

आयतें 3-7. तब यहोवा याजकों को यह निर्देशित करते हुए आगे बढ़ता है कि वे कैसे उस व्यक्ति का दाम निकालें जिसे यहोवा को अर्पण किया गया था। पाठ स्पष्ट करता है कि दाम **पवित्रस्थान के शेकेल** पर आधारित होना चाहिए था। **स्पष्टतया**, आधिकारिक "शेकेल" यह सुनिश्चित् करने के लिए पवित्रस्थान में रखा गया था कि इस प्रकार के लेन देन में चाँदी की उचित तौल तौला जाए। आयु तथा लिंग के आधार पर व्यक्ति के दाम में भिन्नता थी। चार आयु वर्गों में व्यक्ति विशेष के दाम को वर्गीकृत किया गया थाः

20 वर्ष से 60 वर्ष -
पुरुष: 50 शेकेल स्त्री: 30 शेकेल
5 वर्ष से 20 वर्ष -
पुरुष: 20 शेकेल स्त्री: 10 शेकेल
1 वर्ष से 5 वर्ष -
पुरुष: 5 शेकेल स्त्री: 3 शेकेल
60 वर्ष से ऊपर -
पुरुष: 15 शेकेल स्त्री: 10 शेकेल

क्योंकि हरेक श्रेणी में पुरुषों का दाम स्त्रियों के दाम से अधिक था, तो दाम में विषमता का विवाद करते हुए कुछ विद्वान कहते हैं कि पुरुषों के समान स्त्रियां, मूल्यवान नहीं हैं। यद्यपि, यह नियम कृषिप्रधान समाज के लिए था जिसमें खेतों में कार्य करने के लिए शारीरिक बल की आवश्यकता होती है।[9] इस प्रकार, इस विधि के उद्देश्य के लिए, लोगों का दाम परिवार और समाज में आर्थिक प्रभाव के द्वारा लगाया जाता था। अनाज पैदा करने - फसल लगाने और फसल काटने में और पशुओं की देखभाल में अधिक महत्वपूर्ण लोग - पुरुष ही थे, इसलिए स्त्रियों की अपेक्षा उनका दाम अधिक था। इसी कारण, युवा पुरुषों (बीस से साठ वर्ष) का दाम, इससे कम और इससे अधिक आयु के पुरुषों से बहुत अधिक था।

आयत 8. हर आयु वर्ग के लोगों का दाम निर्धारण करने के पश्चात्, व्यवस्था इस विधि में कुछ ढील भी देता है। यह आयत उस व्यक्ति के बारे में बताता है जो सामान्य **मूल्य निर्धारण** से भी **कंगाल** था। इस **कंगाल** व्यक्ति को याजक के पास ले जाया जाना चाहिए था ताकि वह उसके **पूँजी** के आधार पर उसका दाम निर्धारण कर सके। दूसरे शब्दों में, ताकि याजक इस व्यक्ति को संकल्प से छुड़ाने के लिए भरे जाने वाले दाम कम करे। याजक को इस कंगाल व्यक्ति की परिस्थति

का अच्छी तरह जाँच पड़ताल कर लेना चाहिए था ताकि उसके लिए उचित मूल्य निर्धारण करे और इसके पश्चात् वह ठहराए गए दाम के बजाय उचित दाम चुकाये।

जिस व्यक्ति के लिए संकल्प किया गया था उसके बदले भुगतान किए गए धन को परमेश्वर को दिया जाना चाहिए था। दूसरे शब्दों में, यह याजकों को यहोवा की सेवा में प्रयोग करने के लिए दिया जाना चाहिए था।

यहोवा को चढ़ाने के लिए पशुओं के संकल्प का दाम (27:9-13)

9"फिर जिन पशुओं में से लोग यहोवा को चढ़ावा चढ़ाते हैं, यदि ऐसों में से कोई संकल्प किया जाए, तो जो पशु कोई यहोवा को दे वह पवित्र ठहरेगा। 10वह उसे किसी प्रकार से न बदले, न तो वह बुरे के बदले अच्छा, और न अच्छे के बदले बुरा दे; और यदि वह उस पशु के बदले दूसरा पशु दे, तो वह और उसका बदला दोनों पवित्र ठहरेंगे। 11और जिन पशुओं में से लोग यहोवा के लिये चढ़ावा नहीं चढ़ाते ऐसों में से यदि वह हो, तो वह उसको याजक के सामने खड़ा कर दे, 12तब याजक पशु के गुण-अवगुण दोनों विचारकर उसका मोल ठहराए; और जितना याजक ठहराए उसका मोल उतना ही ठहरे। 13पर यदि संकल्प करनेवाला उसे किसी प्रकार से छुड़ाना चाहे, तो जो मोल याजक ने ठहराया हो उसमें उसका पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर दे।"

यह अनुच्छेद यह संभावना प्रस्तुत करता है कि जिसने संकल्प लिया है वह किसी व्यक्ति विशेष के बजाय किसी पशु का भी संकल्प ले सकता था। यहोवा ने दो प्रकार के पशुओं को निर्धारित किया था जो उसको देने के लिए प्रतिज्ञा किया जा सकता थाः वे पशु जिनको परमेश्वर के लिए भेंट चढ़ाया जा सकता था और जिनको भेंट नहीं चढ़ाया जा सकता था।

आयतें 9, 10. पाठ पहले उन **पशुओं** के बारे में बताता है जिनको **यहोवा** को भेंट चढ़ाया जा सकता था (जैसे भेड़, बकरी, या बैल)। नियम यह था कि ऐसे पशुओं को जिनके बारे में एक बार संकल्प कर लिया जाता था तो वे यहोवा के होते और इसलिए वे **पवित्र** थे। कोई भी पशु को बदल नहीं सकता था (यह पशु के बदले धन देने के लिए भी मना करता है)। यदि किसी ने किसी पशु के लिए संकल्प किया हो और उसके पश्चात् उस पशु के बदले दूसरा पशु देता है तो ऐसे स्थिति में दोनों पशु यहोवा के होंगे। चाहे वह कमज़ोर पशु (जैसे दुबला पतला पशु) के बदले अच्छा मोटा ताज़ा पशु (जैसे तंदुरूस्त मेम्ना इत्यादि) दे या पहले संकल्प किए पशु के बदले अच्छा पशु दे, दोनों परिस्थतियों पर लागू होगा। जो पशु यहोवा के हैं उन्हें याजकों को दिया जाना चाहिए और उनको भेंट स्वरूप बलिदान किया जाना चाहिए।

आयतें 11-13. आगे, परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा कि वे किसी **अशुद्ध पशु** के बारे में संकल्प नहीं कर सकते हैं जिसे भेंट के रूप में बलिदान न किया जा सके।

कई टीकाकार यह मानते हैं यह संदर्भ किसी अशुद्ध पशु जैसे गधा, ऊँट या घोड़ा हो सकता है। दूसरी तरफ़ हैरीसन का मानना है कि यह अनुच्छेद उन अशुद्ध पशुओं की ओर संकेत करता है क्योंकि वे "दोषी" थे। ऐसे पशु, यद्यपि वे भेंट चढ़ाने के योग्य भेड़, बकरी या अन्य पशुओं में से थे, लेकिन उनको इसलिए भेंट नहीं चढ़ाया जा सकता था क्योंकि वे "दोषी" थे।[10] एक अशुद्ध पशु का क्या लाभ यदि यह **याजकों** को वेदी पर भेंट चढ़ाने के लिए दिया जाए (27:11)? वह उसका उपयोग व्यक्तिगत उद्देश्य के लिए कर सकता था, या निवासस्थान के सेवाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु बेचा जा सकता था।

यदि किसी इस्राएली ने अपने संकल्प के बदले ऐसे पशु को यहोवा को दिया, तो इसका दाम **याजकों** को तय करना था। इसका दाम निर्धारित करने के उद्धेश्य से, याजकों को यह तय करना था कि क्या पशु अच्छा या बुरा था, या फिर दोनों के बीच में है। पुनरावृत इब्रानी शब्द בֵּין *(बयीन)* का अनुवाद **यह** या **वह** किया गया है जिसका यथा अर्थ "बीच" में है (27:12)।

व्यवस्था यह बताता है कि नियमानुसार इस प्रकार के पशु को, जिसके बारे में संकल्प लिया गया था, उस व्यक्ति के द्वारा नहीं छुड़ाया जा सकता था जिसने इसे यहोवा को देने की प्रतिज्ञा की थी। फिर भी, यदि वह उसको छुड़ाना चाहे तो वह याजक को इसके दाम के साथ ही उसका **पाँचवा** भाग भी भरना होगा (27:13)। संभवतः बीस प्रतिशत (पाँचवाँ भाग) का दण्ड लोगों को जल्दबाज़ी में संकल्प लेने से रोकने के लिए लगाया गया होगा। यदि इस बात का उन्हें पता चले कि उनको प्रतिज्ञा की गधे छुड़ाने के लिए बीस प्रतिशत अतिरिक्त दाम चुकाने होंगे, तो वे संकल्प लेने से पहले इस विषय पर गम्भीरता से विचार करेंगे।

परमेश्वर को समर्पित सम्पत्ति का मूल्यांकन (27:14-25)

[14]"फिर यदि कोई अपना घर यहोवा के लिये पवित्र ठहराकर संकल्प करे, तो याजक उसके गुण-अवगुण दोनों विचारकर उसका मोल ठहराए; और जितना याजक ठहराए उसका मोल उतना ही ठहरे। [15]और यदि घर का पवित्र करनेवाला उसे छुड़ाना चाहे, तो जितना रुपया याजक ने उसका मोल ठहराया हो उसमें वह पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर दे, तब वह घर उसी का रहेगा। [16]फिर यदि कोई अपनी निज भूमि का कोई भाग यहोवा के लिये पवित्र ठहराना चाहे, तो उसका मोल इसके अनुसार ठहरे कि उसमें कितना बीज पड़ेगा; जितनी भूमि में होमेर भर जौ पड़े उतनी का मोल पचास शेकेल ठहरे। [17]यदि वह अपना खेत जुबली के वर्ष ही में पवित्र ठहराए, तो उसका दाम तेरे ठहराने के अनुसार ठहरे; [18]और यदि वह अपना खेत जुबली के वर्ष के बाद पवित्र ठहराए, तो जितने वर्ष दूसरे जुबली के वर्ष के बाकी रहें उन्हीं के अनुसार याजक उसके लिये रुपये का हिसाब करे, तब जितना हिसाब में आए उतना याजक के ठहराने से कम हो। [19]और यदि खेत का पवित्र ठहरानेवाला उसे छुड़ाना चाहे, तो जो दाम याजक ने ठहराया हो उसमें वह पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर दे, तब खेत उसी का रहेगा। [20]पर यदि वह खेत को

छुड़ाना न चाहे, या उसने उसको दूसरे के हाथ बेचा हो, तो खेत आगे को कभी न छुड़ाया जाए; 21परन्तु जब वह खेत जुबली के वर्ष में छूटे, तब पूरी रीति से अर्पण किए हुए खेत के समान यहोवा के लिये पवित्र ठहरे, अर्थात् वह याजक ही की निज भूमि हो जाए। 22फिर यदि कोई अपना मोल लिया हुआ खेत, जो उसकी निज भूमि के खेतों में का न हो, यहोवा के लिये पवित्र ठहराए, 23तो याजक जुबली* के वर्ष तक का हिसाब करके उस मनुष्य के लिये जितना ठहराए उतना ही वह यहोवा के लिये पवित्र जानकर उसी दिन दे दे। 24जुबली के वर्ष में वह खेत उसी के अधिकार में जिससे वह मोल लिया गया हो फिर आ जाए, अर्थात् जिसकी वह निज भूमि हो उसी की फिर हो जाए। 25जिस जिस वस्तु का मोल याजक ठहराए उसका मोल पवित्रस्थान ही के शेकेल के हिसाब से ठहरे: शेकेल बीस गेरा का ठहरे।"

व्यक्तियों एवं पशुओं के अलावा, कभी-कभी इस्राएली लोग सम्पत्ति एवं घरों को यहोवा को समर्पण करते थे। इन आयतों में तीन मामलों पर विचार किया गया है। इसमें से अधिकांश विधियां पच्चीसवें अध्याय में पाए जाने वाले जुबली वर्ष से संबंधित विधियाँ हैं।

आयतें 14, 15. *घर को पवित्र ठहराना।* प्रथम मामला यह है कि यदि कोई यहोवा के लिए **अपने घर को पवित्र ठहराता** है। **याजक** को उस घर का दाम तय करना था, यह उसको इसके गुण एवं अवगुण पर विचारकर इसका मोल ठहराना था।[11] दूसरे शब्दों में, उसको "अच्छे" घरों की स्थिति के अनुसार इस घर का दाम तय करना था - चाहे यह नया या पुराना हो, बड़ा या छोटा हो, इसका निर्माण ठीक है या नहीं, क्या यह अच्छी स्थिति में या जीर्ण-शीर्ण स्थिति में है। इन बातों के आधार पर जिस व्यक्ति ने **घर छुड़ाने की इच्छा** की है, उस घर का दाम लगाया जाए - केवल इतना कि अशुद्ध पशु के समान उसका **पांचवाँ भाग** (बीस प्रतिशत) अतिरिक्त **दाम** मिलाकर उसको उस घर का पूरा दाम चुकाना होगा ताकि वह अपने संकल्प से छूट जाए।

आयतें 16-19. *भूमि को पवित्र ठहराना।* यदि कोई अपने भूमि का निज भाग **यहोवा** के लिए **पवित्र ठहराए**, तो, इसका भी दाम लगाया जाना चाहिए था। इसका दाम याजक के दाम लगाने के द्वारा नहीं ठहराया जाना चाहिए था, बल्कि इसका दाम का निर्धारण भूमि पर कितना बीज बोया जाता था उसके द्वारा निर्धारित किया जाना चाहिए था (यथाशब्द "इसके बीज के अनुसार")। **विधि, बीज के लिए दाम तय करती थी:** होमेर भर जौ (लगभग पाँच बुशेल) जिसका मूल्यांकन पचास शेकेल चाँदी आंका गया था (27:16)।[12] इसलिए, यदि प्रति वर्ष भूमि पर बीज बोने के लिए दो होमेर बीज की आवश्यकता पड़ती थी, तब भूमि का आंकलन एक सौ शेकेल चांदी ठहरता था।

जब यह पहला मूल्यांकन हो जाता था, तो जुबली वर्ष के कारण भूमि का दाम सुनिश्चित किया जाता था। इस बात की कई संभावनाएं थीं:

1. यदि जिस इस्राएली ने **अपनी भूमि का निज भाग जुबली वर्ष में पवित्र** करने की संकल्प खाई है, तो भूमि का **दाम** याजक के ठहराए जाने के अनुसार ठहरे

(27:17)। उपरोक्त उदाहरण के अनुसार, भूमि का दाम एक सौ शेकेल ठहरेगा।

2. यदि उसने अपनी **भूमि किसी अन्य समय पवित्र किया है** तो इसका दाम याजक के द्वारा ठहराया जाएगा, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि **जुबली वर्ष** के कितने और **वर्ष** बचे हैं (27:18)। यदि हम उपरोक्त उदाहरण देखें तो यदि भूमि का दाम एक सौ शेकेल था और उसके स्वामी ने जुबली के दस वर्ष पश्चात् इसे अर्पण किया था, तब इसका दाम अस्सी शेकेल ठहरेगा। जैसा पाठ कहता है, याजक के **मूल्यांकन** से दस वर्ष **घटा दिया जाएगा**।

3. यदि उस व्यक्ति, जिसने भूमि पवित्र करने की संकल्प ली थी बाद में उसे **छुड़ाना** चाहे तो वह ऐसा याजक द्वारा ठहराए गए दाम के साथ उसका **पाँचवां भाग** (बीस प्रतिशत) चुकाकर उसे छुड़ा सकता था। जब वह ऐसा कर लेता था तो उसको वह **भूमि मिल जाएगी** (27:19)। वह फिर से उस भूमि का वैधानिक स्वामी हो जाएगा।

आयतें 20, 21. यदि उस व्यक्ति ने जिसकी **भूमि** थी और उसे उसने यहोवा को अर्पण किया था और उसे उसने किसी अन्य व्यक्ति को **बेच** दिया था तो इसके लिए दूसरी विधि लागू होती। इससे आगे, अगले **जुबली** में, उसे या उसके परिवार के किसी भी सदस्य को यह **भूमि** नहीं लौटाई जाएगी। पवित्र किए गए भूमि को बेचने के द्वारा इससे उसका अधिकार समाप्त हो जाएगा। यह भूमि **यहोवा के लिए पवित्र** ठहरेगा, ताकि यह उसके उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाए। यह याजक की **भूमि** के रूप में **ठहराई जाएगी** ताकि वह परमेश्वर की प्रतिनिधि के रूप में, उसे परमेश्वर की सेवा में उपयोग कर सके।

आयतें 22-24. *मोल ली गई भूमि को पवित्र करना।* एक इस्राएली एक भूमि के टुकड़े को, जो मूल में उसका **भाग** न रहा हो, यहोवा को अर्पण कर सकता था (और इसलिए वह भूमि **जुबली के वर्ष** तक उसे वापस मिल जायेगी)। यदि वह ऐसी भूमि को यहोवा को अर्पण करने का मन बनाता है, तो यह यहोवा के लिए **पवित्र समझा जाएगा** और **याजक** इसके दाम का निर्धारण करेंगे (27:22, 23)। जिसने इस भूमि की संकल्प ली हो तब वह उसका दाम याजकों को दे। वैनहैम के वक्ताव्यनुसार कि जब ऐसी भूमि को यहोवा को अर्पण कर दी जाती है, तब "इसको तुरंत याजकों के ठहराए हुए दाम के अनुसार छुड़ा लिया जाना चाहिए था।"[13] जुबली वर्ष में यह भूमि इसके मूल स्वामी के पास वापस आ जाएगी (27:24)।

आयत 25. इन विधियों में **शेकेल** का प्रयोग, दाम निर्धारण करने के लिए प्रयोग किया गया है जिसका स्पष्टीकरण यहाँ पाया जाता हैः यह **पवित्रस्थान ही का शेकेल ठहरे**, जिसका विश्लेषण **बीस गेरा** के बराबर किया गया है। जबकि उन दिनों दूसरे शेकेल (विभिन्न प्रकार के वजन के बाट) भी प्रचलन में था, लेकिन याजकों ने पवित्रस्थान में अधिकारिक शेकेल वजन का बाट ही रखा था।[14] यह औपचारिक वजन का बाट भूमि, घर, पशु और लोगों का मूल्यांकन और उनको छुड़ाने के लिए मानक स्तर के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए था।

संकल्प रहित भेंट (27:26-33)

[26]"पर घरेलू पशुओं का पहिलौठा, जो पहिलौठा होने के कारण यहोवा का ठहरा है, उसको कोई पवित्र न ठहराए; चाहे वह बछड़ा हो, चाहे भेड़ या बकरी का बच्चा, वह यहोवा ही का है। [27]परन्तु यदि वह अशुद्ध पशु का हो, तो उसका पवित्र ठहरानेवाला उसको याजक के ठहराए हुए मोल के अनुसार उसका पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर छुड़ा सकता है; और यदि वह न छुड़ाया जाए, तो याजक के ठहराए हुए मोल पर बेच दिया जाए। [28]परन्तु अपनी सारी वस्तुओं में से जो कुछ कोई यहोवा के लिये अर्पण करे, चाहे मनुष्य हो चाहे पशु, चाहे उसकी निज भूमि का खेत हो, ऐसी कोई अर्पण की हुई वस्तु न तो बेची जाए और न छुड़ाई जाए; जो कुछ अर्पण किया जाए वह यहोवा के लिये परमपवित्र ठहरे। [29]मनुष्यों में से जो कोई मृत्यु-दण्ड के लिये अर्पण किया जाए, वह छुड़ाया न जाए; निश्चय वह मार डाला जाए। [30]फिर भूमि की उपज का सारा दशमांश, चाहे वह भूमि का बीज हो चाहे वृक्ष का फल, वह यहोवा ही का है; वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरे। [31]यदि कोई अपने दशमांश में से कुछ छुड़ाना चाहे, तो पाँचवाँ भाग बढ़ाकर उसको छुड़ाए। [32]और गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ, अर्थात् जो जो पशु गिनने के लिये लाठी के नीचे से निकल जानेवाले हैं उनका दशमांश, अर्थात् दस दस पीछे एक एक पशु यहोवा के लिये पवित्र ठहरे। [33]कोई उसके गुण अवगुण न विचारे, और न उनको बदले; और यदि कोई उसको बदल भी ले, तो वह और उसका बदला दोनों पवित्र ठहरें; और वह कभी छुड़ाया न जाए।"

इस अध्याय का मुख्य शीर्षक "संकल्प" है - इस्राएली लोग यहोवा के लिए अपने संकल्प में क्या सम्मिलित कर सकते थे और वे उन संकल्पों को कैसे पूरा कर सकते थे। इस शीर्षक का अंतिम शब्द इस बात का विस्तारीकरण करता है कि लोग स्वेक्षा से परमेश्वर के लिए गए संकल्प के साथ क्या नहीं कर सकते थे। इस प्रकार के तीन किस्म के भेंटों के बारे में यहाँ चर्चा किया गया है।

आयतें 26, 27. इस्राएली लोगों को **पशुओं के पहलौठों** को अपने संकल्प में नहीं शामिल करना था। ऐसा क्यों नहीं करना था? क्योंकि पहलौठे चाहे **बैल या भेड़** का हो, वे पहले से ही **यहोवा** के हैं (देखें निर्गमन 13:1, 2, 12, 13)। शुद्ध पशुओं के पहलौठे नहीं छुड़ाए जाने थे, क्योंकि वे भेंट के रूप में यहोवा को चढ़ाए जाते थे। इसके विपरीत, **अशुद्ध पशुओं** के पहलौठों को याजक को उसका **दाम** और पारंपरिक बीस प्रतिशत अतिरिक्त रकम देकर छुड़ाया जा सकता था। यदि जिसके ये पशु थे और वह उन्हें न छुड़ाना चाहे तो उन्हें बेच देना चाहिए था, क्योंकि इनको बलि नहीं किया सकता था। इन पशुओं को बेचने से प्राप्त धन को पवित्रस्थान की सेवा में लगाया जा सकता था।

आयतें 28, 29. ये आयतें विशेष रूप से परमेश्वर को अर्पण किए गए व्यक्ति व सम्पत्ति के बारे में बताता है। इससे पहले बात की गई विधियों में स्वेक्षा से यहोवा के लिए पवित्र ठहराए गए व्यक्तियों के बारे में चर्चा की गई है, लेकिन इस

कानून में कुछ अलग ही बात है।

ये आयतें उन बातों के बारे में चर्चा करती हैं जिसे **यहोवा के लिए अर्पण किया गया है**। "अर्पण किया गया," इब्रानी शब्द חֵרֶם (*हेरेम)* से संबंधित है, जिसका यह अर्थ हो सकता है "विनाश के लिए अर्पित" या "जिस पर प्रतिबंध लगा हो।" KJV में इसके लिए "अर्पण की गई वस्तु" या "समर्पित होना" प्रयोग किया गया है। यह यह कहता है, "कोई भी अर्पण की गई वस्तु को कोई भी यहोवा को अर्पण न करे"। NRSV अनुवाद के अनुसार, "जो कुछ एक व्यक्ति के पास है जो पवित्र ठहराया जा चुका है वह विनाश के लिए अर्पण नहीं किया जा सकता था"। जो भी इस श्रेणी के अंतर्गत आता था उसे नहीं **बेचा या छुड़ाया** जाना चाहिए था। बल्कि, यह तो **विनाश के लिए अर्पण किया गया था** और **यहोवा के लिए अति पवित्र** था।

आयत 29 भी इसी प्रकार का निर्देश देता है जिसमें एक व्यक्ति को "नष्ट होने के लिए अर्पण किया गया था।" उसे नहीं **छुड़ाया जाना चाहिए था**; उसे **निश्चय मार दिया जाना चाहिए था**।

प्रश्न यह है कि "कैसे और क्यों एक इस्राएली उन वस्तुओं को अर्पण करे जो उसके पास नष्ट करने के लिए रखा गया है?" क्या ये भिन्न प्रकार के संकल्प के लिए भिन्न वर्ग है? क्या एक व्यक्ति जो उसकी संपत्ति है, का संकल्प लेगा या "अलग करेगा" - हो सकता है कि वह एक पशु हो - और उसे नष्ट करने की प्रतिज्ञा ले? यदि मामला ऐसा है तो क्या यह संभव है कि किसी को किसी व्यक्ति को जो उसके हैं - जैसे दास या फिर कोई बच्चे - को नष्ट करने की अनुमति थी? यदि ऐसा है, तो ये नियम, जो "प्रतिबंधित है" उसको बदलने के लिए मना करता था। उसको उन्हें मारना था या फिर मरवा देना चाहिए था।

इस विधि द्वारा यहोवा जो चाहता था, वह ऐसा नहीं लगता है। विधि किसी को भी अपनी इच्छा से किसी का प्राण लेने से मना करता है।[15] पुराने नियम में अन्यत्र जब भी किसी के प्राण या वस्तुओं को "नष्ट करने के लिए अर्पण" किया गया था, तो यह मनुष्य नहीं बल्कि परमेश्वर है जिसने प्रतिबंध लगाया था। यह विश्वास करना कठिन लगता है कि परमेश्वर एक इस्राएली को, किसी वस्तु को - विशेषकर दूसरे व्यक्ति को - नष्ट करने की अनुमति दे सकता था।

तब, इस अनुच्छेद का क्या अर्थ है? एक इस्राएली उन वस्तुओं पर कैसे नियंत्रण रख सकता था जो "नष्ट करने के लिए अर्पण" किए गए थे? दो संभावनाएं इस अनुच्छेद का विश्लेषण करती है।

पहली संभावना यह है कि "नष्ट करने के लिए अर्पित" या तो वे वस्तुएं थीं जो लगातार पाप के कारण (मनुष्य के मामले में) या फिर मूर्तिपूजा से उनका संबंध होने के कारण (पशुओं और भूमि के मामले में) उन्हें नष्ट कर दिया जाना चाहिए था।[16] सी. एफ़. कील और एफ़. डेलित्ज ने लिखा कि यह विधि, अर्पण किए गए व्यक्तियों को मारे जाने और अचेतन वस्तुओं को पवित्रस्थान में दिये जाने या फिर नष्ट कर दिये जाने के बारे में कहता है। तब उन्होंने इसके साथ यह भी कहा,

> इसमें कोई संदेह नहीं है कि उत्तरवर्ती बात केवल मूर्तिपूजकों के भूमि से संबंधित

था ... [व्यवस्थाविवरण 13:13-18]। यद्यपि, इसके साथ यह भी कहा जा सकता है कि प्रतिबंध का संकल्प उस व्यक्ति के साथ किया जा सकता था जो जीवन की पवित्रता, जिसकी बाध्यता सब पर थी, को हट करके बार-बार टालता था; और किसी को भी अपनी इच्छा और फ़ायदे के अनुसार किसी भी व्यक्ति को इस प्रकार अर्पण करने की स्वतंत्रता नहीं था। ... एक मायने में इसके सदृश, पशु और भूमि के स्वामी को उन पर प्रतिबंध लगाने की अनुमति तभी दी जा सकती थी जब वे मूर्तिपूजा के द्वारा अशुद्ध किये गये हों या फिर अपवित्र उद्देश्यों के कारण उनका दुरूपयोग किया गया हो।[17]

उन्होंने यह भी कहा कि निस्संदेह प्रतिबंध केवल तब लगाया जा सकता था जब किसी ने परमेश्वर की इच्छा का प्रतिरोध किया हो। यह "परमेश्वर की न्यायिक पवित्रता का कार्य था जो धर्मिकता और न्याय में अपने आप प्रगट होता है।"[18]

दूसरी संभावना यह है कि जिन बातों के बारे में यहाँ बताया गया है वे ये बातें हैं; जो युद्ध (युद्ध की लूट) में जीत ली जाती थी, जिस पर यहोवा ने प्रतिबंध लगाया था; जिसमें बंधुए सम्मिलित हो सकते थे। आर. लैयर्ड हैरिस ने लिखा, "सबसे जाना पहचाना उदाहरण यरीहो (यहोशू 6:24) और शाऊल के दिनों अमालेकियों का लूट था (1 शमूएल 15:3-9)। इस प्रकार की लूट और बंधुए छुड़ाए, व बेचे नहीं जा सकते थे।"[19] जो सिपाही युद्ध से इनमें से किसी भी एक या उससे अधिक चीज़ों के साथ, जो नष्ट करने के लिए अर्पण किए गए थे, लौटते थे तो उनको उन्हें बिना छुड़ाए नष्ट करना था (या फिर अचेतन वस्तुओं को पवित्रस्थान में देना था)। जॉन एच. हेज़ कहते हैं,

अर्पण की गई वस्तुएं ... छुड़ाने व बेचने की संभावनाओं के बिना परमेश्वर के लिए प्रतिज्ञा व उसको दी गई थी। [उदाहरण के लिए, देखें गिनती 21:1-3; व्यव. 13:13-18.] ... अर्पण की गई वस्तु, मंदिर व याजकों की सम्पत्ति (महापवित्र) हो जाती थी अन्यथा उनको नष्ट कर दिया जाना चाहिए था (गिनती 18:14; 21:2-3)।[20]

आयत 28 का संदर्भ कि **उसकी निज भूमि का खेत** को युद्ध में कैसे जीता जा सकता है, समझना कठिन है। संभवतः इसका आशय यह है कि यह युद्ध में लूट के माल से खरीदा गया खेत हो सकता है। कोई भी यह पूछ सकता है कि कोई कैसे इस प्रकार के खेत को "नष्ट करने के लिए अर्पण" कर सकता था। हो सकता है कि यह परती पड़ा हो; या फिर जैसे हेज़ ने कहा कि यह पवित्रस्थान की सम्पत्ति हो सकती है, जिसका समर्थन 27:21 में भी पाया जाता है, जो "अर्पण किए हुए खेत" के बारे में कहता है।

आयतें 30-33. दशमांश, दसवाँ भाग का भी संकल्प नहीं लिया जाना चाहिए था, क्योंकि दशमांश पहले से ही यहोवा का था। चूंकि यह यहोवा का था तो कोई भी इसे अपनी स्वेक्षा से परमेश्वर के लिए संकल्प नहीं ले सकता था (27:30)।

यहोवा ने पहले ही कहा था कि इस्राएलियों के फसल का दशमांश यहोवा का है, उसके खेतों में से काटी गई फसलों का दशमांश और उसके पेड़ों व दाख की

बारी से तोड़े गए फलों का दशमांश, यहोवा का है। यदि वह परमेश्वर के लिए संकल्प किए गए फसल या फलों में से छुड़ाना चाहे तो बीस प्रतिशत अतिरिक्त भुगतान कर वह उसे छुड़ा सकता था (27:31)।

विधि यह भी कहती है कि इस्राएलियों को अपने पशुओं का दशमांश भी यहोवा को देना होगा। यह इस बात को भी स्पष्ट करता है कि वह पशु का दशमांश पशुओं के **झुंड** से यूँ ही कर सकता था। पशुओं को एक स्थान से गुज़ारना था और हरेक **दशवाँ** पशु यहोवा को अर्पण किया जाना चाहिए था। चाहे वह दशवाँ पशु **भला या बुरा** हो, इस बात पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए था और उसको बदला भी नहीं जाना चाहिए था। यद्यपि, यदि अर्पण किए गए पशु को किसान **बदलना** चाहे तो ऐसे स्थिति में दोनों पशु परमेश्वर को दिया जाना चाहिए था। वे दोनों यहोवा के लिए **पवित्र** ठहरते और उन्हें नहीं **छुड़ाया जाना** चाहिए था (27:32, 33)।

सारांश (27:34)

34जो आज्ञाएँ यहोवा ने इस्राएलियों के लिये सीनै पर्वत पर मूसा को दी थीं वे ये ही हैं।

इस पुस्तक के साथ यह अध्याय, अंतिम सारांश के साथ समाप्त होता है।

आयत 34. यह वाक्य सभी पूर्ववर्ती **आज्ञाएं** जो **सिनै पर्वत** पर **यहोवा** ने **मूसा** और **इस्राएलियों** को दिया था, को संदर्भित करता है।[21] इसलिए, इस पुस्तक का अंतिम अध्याय अब तक जो कुछ कहा गया है उस पर ज़ोर देता है: लैव्यव्यवस्था में पाई जाने वाली व्यवस्था यहोवा की ओर से है! इसलिए उनको मानना चाहिए।

लैव्यव्यवस्था की पुस्तक और परमेश्वर द्वारा सिनै पर्वत पर अधिकांश विधियों का दिया जाना यहाँ समाप्त होता है। गिनती की किताब लैव्यव्यवस्था की पुस्तक से आगे की विधि जारी रखता है: परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था लोगों को दिया और उन्हें आज्ञा दिया कि वे प्रतिज्ञा की देश में जाने के लिए तैयार हो जाएं। गिनती की पुस्तक के आरंभिक अध्यायों में सिनै से कनान देश की यात्रा प्रारंभ करने से पहले गिनती 10:11-13 में, कुछ और विधियां पाई जातीं हैं।

अनुप्रयोग

आज संकल्प लेना (अध्याय 27)

स्पष्ट रूप से, पुराने नियम के समय लोग, परमेश्वर के लिए संकल्प लेते थे। नये नियम के समय इसके बारे में क्या है? यीशु ने कहा,

> "फिर तुम सुन चुके हो कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था, 'झूठी शपथ न खाना, परन्तु प्रभु के लिये अपनी शपथ को पूरी करना।' परन्तु मैं तुम से यह

> कहता हूँ कि कभी शपथ न खाना; न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है; न धरती की, क्योंकि वह उसके पाँवों की चौकी है; न यरूशलेम की, क्योंकि वह महाराजा का नगर है। अपने सिर की भी शपथ न खाना क्योंकि तू एक बाल को भी न उजला, न काला कर सकता है। परन्तु तुम्हारी बात 'हाँ' की 'हाँ,' या 'नहीं' की 'नहीं' हो; क्योंकि जो कुछ इस से अधिक होता है वह बुराई से होता है" (मत्ती 5:33-37; देखें 23:16-22)।

क्या यीशु अपने शिष्यों को कभी भी संकल्प लेने या शपथ खाने से मना कर रहा है? नहीं, स्पष्ट रूप से वह अपने श्रोताओं पर प्रभाव डालने के लिए अतिशयोक्ति भरा शब्दों का प्रयोग कर रहा था। यीशु ने स्वयं महायाजक को उस समय उत्तर दिया जब उसे शपथ के अधीन रखा गया था (मत्ती 26:63, 64)। पौलुस ने अपनी पत्रियों में सच्चा शपथ खाने के बारे में लिखा है (रोमियों 1:9; 1 कुरिं. 15:31; 2 कुरिं. 1:23; गला. 1:20; फिलि. 1:8; 1 थिस्स. 5:27)।[22] इससे बढ़कर, प्रेरितों के काम की पुस्तक यह बताती है कि पौलुस ने मन्नत मानी (प्रेरितों. 18:18)।

क्या कुछ ऐसी बात है जिसके लिए हमको परमेश्वर को "शपथ" देने की आवश्यकता है? खेत? घर? लोग? एक तरफ़ से देखा जाए तो एक मसीही को इन सबको परमेश्वर को देने की "शपथ खानी" चाहिए। परमेश्वर के संतान होने के नाते, एक मसीही परमेश्वर की सम्पत्ति है; इसलिए, जो कुछ उसके पास है वह परमेश्वर का ही है। उसको ये सब परमेश्वर की महिमा और उसके भाइयों के लाभ के लिए ही प्रयोग करना चाहिए। इससे बढ़कर, उसे स्वयं अपने आपको परमेश्वर को अर्पण कर देना चाहिए (2 कुरिं. 8:5), उसे अपने शरीर को "जीवित ... बलिदान" के रूप में उसे चढ़ाना चाहिए (रोमियों 12:1, 2)।

मसीही लोग पुराने नियम काल के समान "नष्ट होने के लिए अर्पण" किए गए लोगों के समान हैं। उनके पाप के कारण उन्हें नष्ट होने के लिए नहीं ठहराया गया है; लेकिन वे तो परमेश्वर को अर्पण किए गए हैं, जीवन और मृत्यु के लिए उन्होंने अपने आपको उसे दे दिया है। एक मसीही होने के नाते, हमें ऐसा जीना चाहिए कि हम अपनी मृत्यु में भी उसकी महिमा कर सकें। जब हम इस प्रकार जीएंगे, तो हम पौलुस के साथ कह सकेंगे, "मेरे लिए जीना मसीह और मरना लाभ है" (फिलि. 1:21)।

समाप्ति नोट्स

[1]कोई भी इस विचारधारा का समर्थन कर सकता था और वह यह भी मान सकता था कि यह अध्याय परमेश्वर से प्रेरित था और मूसा ने इसे लिखा था। [2]जॉन ई. हार्टली, *लैव्यव्यवस्था*, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, खण्ड 4 (डालसः वर्ड बुक्स, 1992), 479. [3]गॉर्डन जे. वैनहैम, *द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था*, द न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री आन दि ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 336. आखिरी दो अध्यायों का संभावित संबंध यह है कि लोगों को विपत्तियों, तनाव और घोर विपत्ति के समय (अध्याय 27) और परमेश्वर जब देश पर विपत्तयां भेजता था तो उससे उपजे तनाव से बचने के लिए प्रतिज्ञा करना था (अध्याय 26)। [4]रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, द NIV अप्लीकेशन कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जॉडरवैन, 2004),

464. [5]जेकब मिलग्रोम ने कहा, "एक संकल्प, परमेश्वर को दी गई प्रतिज्ञा है, जो आमतौर पर एक प्रकार का भेंट होता था, जो उसके प्रार्थना के संभावित उत्तर के प्रत्युत्तर में होता था - उदाहरणः उद्देश्य प्राप्त करने में सफलता (देखें उत्पत्ति 28:20-22; II शमूएल 15:7-12) या बीमारी या किसी अन्य व्याधि से स्वस्थ होने के कारण (देखें भजन 66:13-15)" (जेकब मिलग्रोम, "द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था," *दि इंटरप्रेटर्स वन वोल्यूम कमेंट्री आन द बाइबल*, संपादक चार्ल्स एम. लेमन [नैशविलः अबिंगदन प्रेस, 1971], 84)। [6]परमेश्वर का अब्राहम को उसके पुत्र (उत्पत्ति 22:1-18) को भेंट करने की आज्ञा, मानवबलि की विचारधारा का समर्थन नहीं करता है। अब्राहम का मामला अलग है और परमेश्वर की आज्ञा का तात्पर्य केवल उसके विश्वास की परख करने की है। यह स्मरण रखा जाना चाहिए कि यहोवा ने उसे इसहाक को बलि नहीं करने दिया। न ही यिप्तह की पुत्री (जबकि इसका अनुवाद ऐसा किया जा सकता है) का मामला, यह प्रमाणित करता है कि परमेश्वर मानवबलि चाहता है, विभिन्न न्यायियों के द्वारा अन्य अधार्मिक कार्यों को परमेश्वर मान्यता नहीं देता है। [7]नवीनतम अनुवादों में इस विचारधारा का समर्थन पाया जाता है। [8]NASB में "Shall be valued" ("ठहराने के अनुसार") तिरछे अक्षरों में लिखा हुआ है, जो यह दर्शाता है कि यह मूल इब्रानी भाषा में नहीं है लेकिन अनुवादकों ने इसे अपने ओर से जोड़ा है। इस परिस्थिति में, अनुवादकों द्वारा इन अतिरिक्त शब्दों के जोड़े जाने से यह इसका विश्लेषण करने के बजाय अधिक उलझन उत्पन्न करता है। [9]आर. के. हैरीसन ने लिखा, "जिन स्त्रियों के लिए संकल्प लिया गया था ... उनका दाम तीस शेकेल संभवतः इसलिए रखा गया होगा क्योंकि वे एक स्वस्थ पुरुष से कम बलशाली थे" (आर. के. हैरीसन, *लैव्यव्यवस्था*, दि टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज [डॉनर्स ग्रूव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1980], 235)। [10]उपरोक्त, 236.

[11]27:12 के समान, पुनरावृत इब्रानी शब्द का अनुवाद "यह या वह" किया गया है जिसका शब्दशः अर्थ "बीच" है। [12]मिलग्रोम का दूसरा दृष्टिकोण थाः "चूँकि एक होमेर जौ, जो लगभग 5 बुशेल था, को एक बहुत बड़े क्षेत्र में बोया जा सकता था और इसके अनुसार भूमि का दाम बहुत थोड़ा होता, तो ऐसा संभव है कि बीज और बीज बोना - यहाँ इसी शब्द का प्रयोग किया गया है - का अर्थ बीज और फसल है (देखें आयत 30)" (मिलग्रोम, 84)। [13]वैनहैम, 341. [14]"'पवित्रस्थान का शेकेल' (आयत 25) एक निर्धारित वज़न के बाट था। आधुनिक सरकारें, बटखरे एवं आयतन माप की स्तर बनाए रखने के लिए उस पर सक्रिय नियंत्रण रखते हैं। प्राचीनकाल में इस प्रकार के स्तर बनाये रखना कठिन था" (आर. लैयर्ड हैरीस, "लैव्यव्यवस्था," एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री, खण्ड 2, *उत्पत्ति - गिनती*, संपादक फ्रैंक ई. गैब्लीन [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1990], 653)। [15]यद्यपि स्वरक्षा या युद्ध में प्राण लेना मना नहीं था। [16]सी. एफ़. कील और एफ़. डेलित्ज, *द पेंटाट्यूक,* खण्ड 2, अनुवादक जेम्स मार्टिन, बिब्लिकल कमेंट्री आन दि ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1959), 485. [17]उपरोक्त। [18]उपरोक्त। [19]हैरिस, 651. [20]जॉन एच. हेस, "लैव्यव्यवस्था," इन *हार्पर्स बाइबल कॉमेंटरी*, एड. जेम्स एल. मेयज (सैन फ्रांसिस्को: हार्पर एण्ड रो, 1988), 181.

[21]यह सुझाव दिया गया है कि यह तथ्य कि यह सारांश 26:46 में दिए गए सारांश से संक्षिप्त है जो यह दिखाता है कि अध्याय 26 के अंत में दिया गया सारांश अध्याय 1 से लेकर 26 तक लागू होता है, लेकिन अध्याय 27 के अंत में दिया गया सारांश केवल इसी अध्याय के लिए लागू होता है। [22]सैलर्स एस. क्रैन, जूनियर., *मैथ्यु 1-13*, ट्रुथ फ़ॉर टुडे कमेन्ट्री (सर्ची, आर्क.: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 2010), 181.